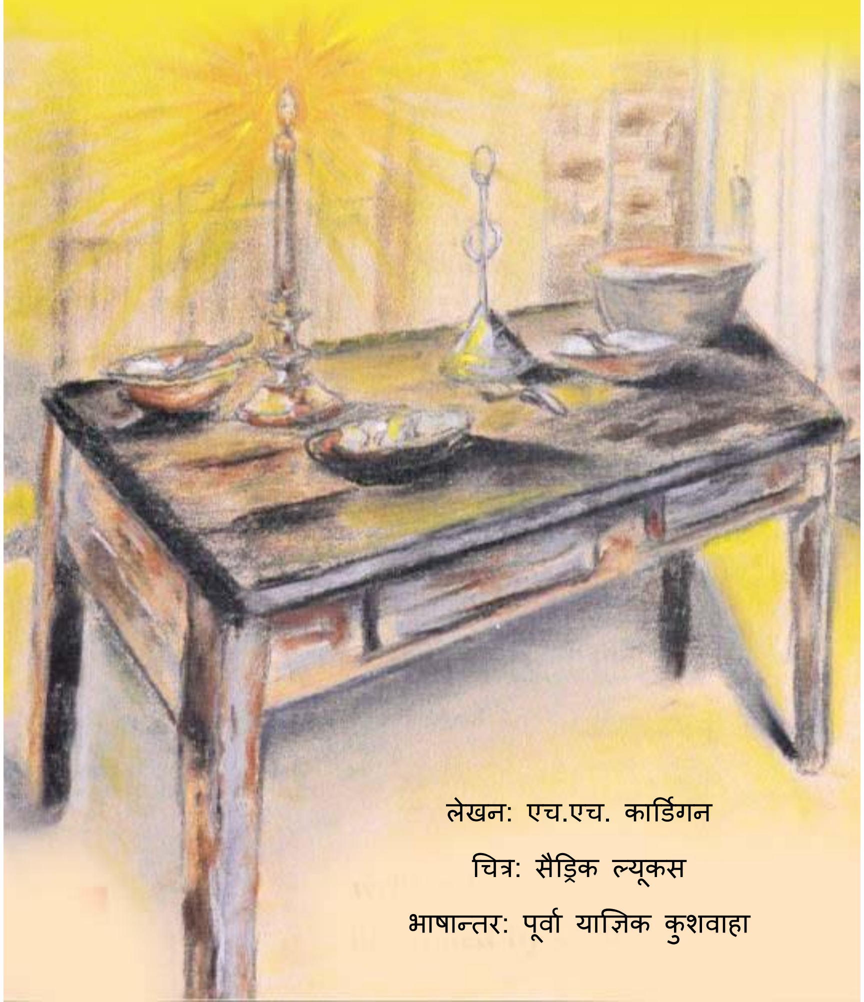
एक मोमबत्ती की रोशनी



लेखन: एच.एच. कार्डिगन

चित्र: सैड्रिक ल्यूकस

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक मोमबत्ती की रोशनी



लेखन: एच.एच. कार्डिगन

चित्र: सैड्रिक ल्यूकस

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



1761 में एक नन्ही लड़की को एक नीलामी में मैसाच्युसैटस् के बॉस्टन शहर में बेचा गया। वह सिर्फ सात वर्ष की थी। वह अफ्रीका में बसे अपने घर से बस बॉस्टन आई ही थी, जहाँ से उसे धर-पकड़ कर अमरीका ला एक गुलाम के रूप में बेच दिया गया था।

बॉस्टन के उस बन्दरगाह के लोगों के पास यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि वह बीमार छोटी-सी लड़की किसी दिन अमरीका की पहली अफ्रीकी अमरीकी कवियत्री बनेगी।



उस नन्ही का नाम फिलिस था। यह नाम उसे गुलामों को लाने वाले उस जहाज़ की बदौलत मिला था, जो उसे अफ्रीका से लाया था। अमरीका में गुलामी पिछले सौ सालों से जारी थी। जब तक फिलिस बॉस्टन पहुँची, अमरीका में गुलामों की संख्या भी उतनी हो चुकी थी, जितनी वहाँ आ बसे उपनिवेशवादियों की थी।

फिलिस जब बॉस्टन बन्दरगाह में निपट अकेली और डर से थर्राती किसी अजनबी को बेची जाने को खड़ी थी, वह इस सबके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी।



जो महिला फिलिस को ख़रीद अपने साथ ले गई वह उसकी ज़िन्दगी को हमेशा के लिए बदल देने वाली थी।

मिसेज़ सुज़ाना व्हिटली की उम्र बढ़ती जा रही थी। सो उन्हें किसी ऐसी स्त्री की ज़रूरत थी जो उनकी देखभाल करे और उनके साथ समय भी बिताए। उन्होंने फिलिस को इसलिए ख़रीद लिया था कि लड़की उन्हें दिलचस्प लगी थी। उन्होंने यह सोचा कि उसे मौका दिया जा सकता है।



क्योंकि मिसेज़ व्हिटली को घरेलू गलाम चाहिए था, फिलिस को नहलाया-धुलाया गया और पहनने को नए कपड़े दिए गए। किसी रसूखदार घर को चलाने के लिए जितने भी अंतहीन काम हुआ करते हैं, उन सबका प्रशिक्षण फिलिस को दिया गया। पर जल्द ही ये सारे काम फिलिस से करवाने हमेशा के लिए बन्द हो जाने वाले थे।



फिलिस के तेज़ दिमाग ने उसकी ज़िन्दगी ही बदल डाली। अमरीका आने के 16 महीनों बाद ही फिलिस ने न केवल अंग्रेज़ी बोलनी सीख ली, वह अंग्रेज़ी पढ़ने भी लगी। यह उस युग में हुआ जब अधिकतर औरतें न तो पढ़ पती थीं, न लिख। और किसी गुलाम के पढ़-लिख पाने की बात तो किसीने सुनी तक नहीं थी।

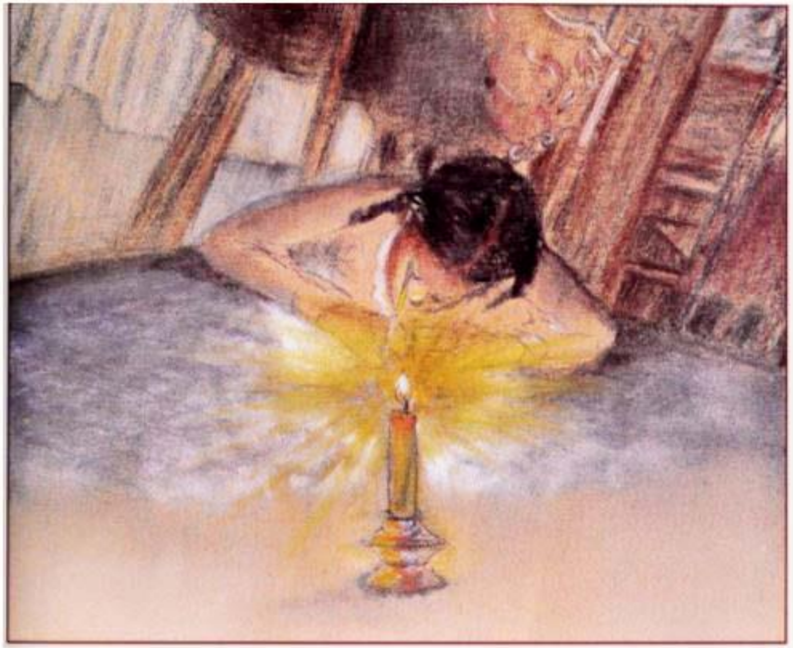


अंग्रज़ी भाषा पर फिलिस की महारत ने मिसेज़ व्हिटली को बेहद खुश कर दिया। उन्होंने शुरू से ही फिलिस की "असाधारण प्रतिभा" को भांप लिया था। इधर फिलिस को बीच-बीच में दीवारों से कोयले से लिखते देखा गया।

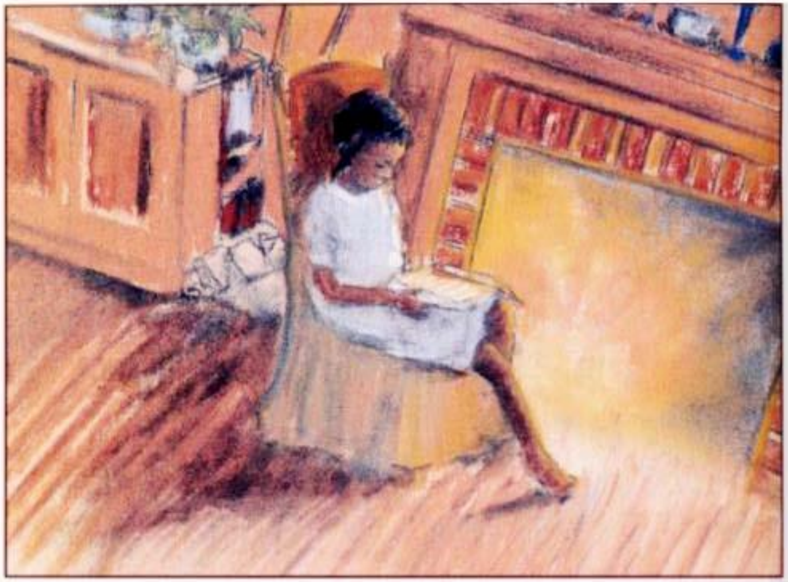
जल्द ही मिसेज़ व्हिटली ने यह सुनिश्चित कर दिया कि फिलिस को भारी काम न सौंपे जाएं। इसी समय से फिलिस को एक घरेलू गुलाम से कहीं अधिक माना जाने लगा - पर आज़ाद वह अब भी नहीं थी।



वह ज़माना ऐसा था जब किसी गुलाम में ऐसे गुण देख उसे सख़्त सज़ा दी जाती थी। पर फिलिस मिसेज़ व्हिटली की चहेती बन चुकी थी। जब वह नौ साल की हुई उन्होंने फिलिस के लिए एक शिक्षिका की व्यवस्था कर दी - उनकी खुद की ही अठारह वर्षीय बेटी, मेरी, जो फिलिस जैसी ही थी। मेरी की तबियत भी अक्सर नासाज़ रहा करती थी। फिलिस और मेरी में अच्छी बनने लगी।



जब तक फिलिस 12 साल की हुई, वह लैटिन समझने लगी थी और कविताएं रचने लगी थी। मिसेज़ व्हिटली को फिलिस की कविताओं ने इस कदर खुश कर दिया कि वे उसे हर रात एक पूरी मोमबत्ती जलाने देतीं। यह कुछ ऐसा था मानो फिलिस का अपना खुद का ही एक दफ्तर हो। वह जब इच्छा हो जागती और लिखने का काम करने लगती। उसके कमरे को गरम रखने वाली आग भी हमेशा जली रहती। ताकि लिखते समय उसका कमरा ठण्डा न हो। हर सुबह नाश्ते के समय फिलिस अपनी कविताएं मिसेज़ व्हिटली को देती।



व्हिटली परिवार बॉस्टन का एक महत्वपूर्ण परिवार था। जल्द ही वे रात के भोज में उनके घर आने वाले महमानों के सामने फिलिस को अपना कौशल दिखाने को कहने लगे। इन महमानें में कुछ बड़े मशहूर लोग भी थे। इनमें एक थे जॉन हैनकॉक, जिन्होंने बाद में अमरीका की आज़ादी के घोषणा पत्र में दस्तख़त किए थे। मैसाच्युसैटस् उपनिवेश के राज्यपाल भी मेहमानों में शामिल थे। इन लोगों को फिलिस पर अचरज होता था। फिलिस सबके सामने पढ़ने में ज़रा भी घबराती नहीं थी। ये मेहमान फिलिस को कभी भूरे कागज़ में लिपटी किताबों के तोहफे भी देते - उस समय ये बेहद कीमती तोहफे हुआ करते थे।



जिस पल से मिसेज़ व्हिटली को फिलिस की प्रतिभा का पता चला था, उन्होंने यह सुनिश्चित कर दिया कि फिलिस दूसरे गुलामों के साथ समय न बिताए। बचपन में फिलिस की सिर्फ एक ही अफ्रीकी अमरीकी सखी थी। वह भी एक गुलाम थी। उसका नाम ओबूर टैनर था। फिलिस और ओबूर की मुलाकात रोड आइलैण्ड के न्यूपोर्ट में हुई थी, जहाँ व्हिटली परिवार छुट्टियाँ मनाने जाया करता था। जब फिलिस बीमार पड़ती उसे अक्सर वहाँ भेजा जाता था।

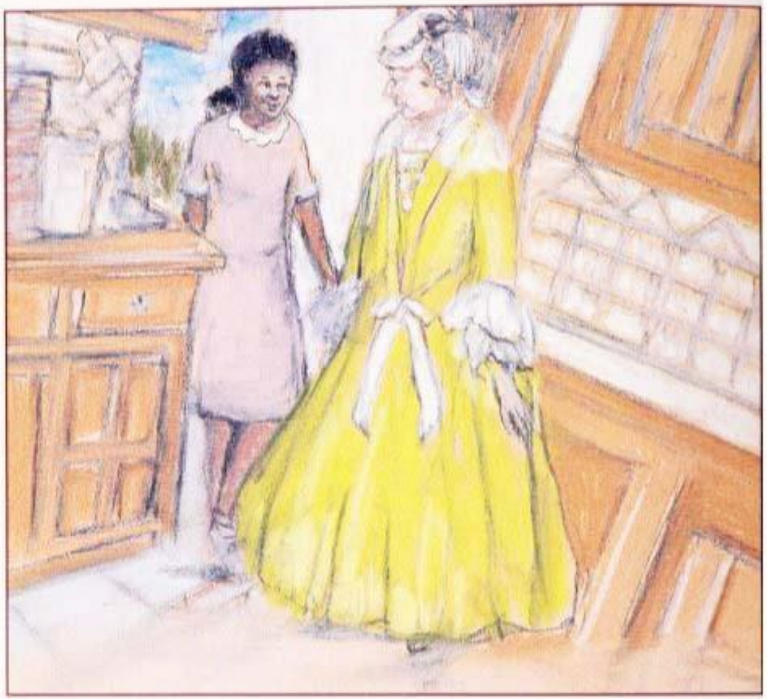


फिलिस को ज़रूर सब बड़ा विचित्र लगा करता होगा। हालांकि हम ओबूर टैनर के साथ उसकी दोस्ती के बारे में खास कुछ नहीं जानते, हम यह ज़रूर जानते हैं कि फिलिस को किसी हालत में ज़्यादा काम करने की छूट नहीं थी। पर साथ ही वह गुलाम भी थी, सो वह अपनी मनमर्ज़ी भी नहीं चला सकती थी। वह एक तरह से पिंजड़े में कैद गाने वाली पाखी सरीखी थी। फिलिस व्हिटली परिवार की संपत्ति थी। उन्होंने उसे अपना कुल नाम तक दिया था।



फिलिस व्हिटली का काफी सारा लेखन धर्म के बारे में था। पर कुछ एक ऐसे देश में गुलाम होने के बारे में भी था, जो खुद आज़ाद होने के लिए लड़ रहा था। 1770 के दशक में पहुँचने तक अमरीकी यह नहीं चाहते थे कि ब्रिटिश लोग उन पर राज करें। वे अपना शासन खुद चलाना चाहते थे।

अमरीकी क्रान्ति के आरंभ होने के पहले ही फिलिस व्हिटली ने अपनी आज़ादी पा ली।



1773 में व्हिटली परिवार ने फिलिस को आज़ाद कर दिया। फिलिस इंग्लैण्ड गई, जहाँ वह अपना पहला कविता संग्रह छपवा सकी। वह उस वक़्त महज बीस वर्ष की थी।

फिलिस व्हिटली की किताब *पोयम्स् ऑन वेरियस सब्जैक्टस्, रिलिजियस एण्ड मॉरल* (विविध धार्मिक व नैतिक विषयों पर कविताएं) वह पहली पुस्तक थी जिसे किसी अफ्रीकी अमरीकी ने लिखा था। और अमरीका की किसी स्त्री द्वारा लिखी गई यह दूसरी किताब थी।



जो फिलिस व्हिटली ने हासिल किया वह अद्भुत था। और महत्वपूर्ण भी था। इस क़िताब के छपने के बाद लोग पहली बार एक गुलाम अफ्रीकी अमरीकी की लिखी कविताएं पढ़ सके। एक गुलाम की नज़र से गुलामी को देखना कई अमरीकियों के लिए ज़रूरी पाठ था।



एक अमरीकी जो फिलिस व्हिटली के लेखन से परिचित थे और उसे पसन्द भी करते थे, जॉर्ज वॉशिंगटन थे। अमरीका लौटने के बाद, अमरीकी क्रान्ति के शुरू होने के साथ फिलिस ने जॉर्ज वॉशिंगटन को एक पत्र लिखा था। वॉशिंगटन ने उसका जवाब भी दिया था। वे उससे मिलना चाहते थे।

यह किसीको मालूम नहीं कि उनकी दरअसल मुलाकात हुई या नहीं। पर एक बात साफ है। जो व्यक्ति अमरीका का पहला राष्ट्रपति बनने वाला था वह फिलिस का, जो कुछ उसने एक मोमबत्ती की रोशनी में हासिल किया था उसका, सम्मान करता था।